

## १०. जीने की कला

### प्रस्तावना

\* जानेमाने शिक्षाविदू, चिंतक **मौलाना अबुल कलाम आज़ाद**, आज़ाद स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षामंत्री थे । वे प्रखर विद्वान एवं **अरबी-फारसी** के ज्ञाता थे । साहित्य के क्षेत्र में आप ललित और चिंतनात्मक निबंध लेखक के रूप में जाने जाते हैं । आपकी दृष्टि से मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है जिसे अन्य सजीवों से अलग तरह से रहना चाहिए ।

जीने की कला एक आवश्यक कला है । व्यक्ति को इस कला से भलीभाँति परिचित होना चाहिए । उसे चाहिए कि जीवन को भलीभाँति जीए । मरते-मरते नहीं जीना चाहिए और मृत्यु के बारे में कभी सोचना ही नहीं चाहिए । हमारे जीवन में हरियाली की आवश्यकता है, सूखेपन या बंजरता की नहीं । खिले हुए पुष्प, बहते झरने, गाते पंछी और बहती हवा आदि को देख मनुष्य प्रसन्नता का अनुभव कर सकता है ।

वस्तुतः हमारे धर्म, दर्शन और अध्यात्म के गहन दर्शन ने मनुष्य को अनावश्यक गंभीर और कृत्रिम बना दिया है । उसे सहज नहीं रहने दिया है । जीवन का लक्ष्य आनंद की प्राप्ति करना होता है, जिसे सिद्ध करने में ही लगे रहना चाहिए ।

### स्वाध्याय

**१. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :**

**१. मनुष्य जीवन को काम में लाया जाना चाहिए ?**

- ( अ ) जीवन को समझने
- ( ब ) हसी -खुशी में बिताने
- ( क ) सरल काम करने
- ( ड ) विकट काम करने

**२. आदमी ज्यादा धार्मिक फिलासफर और सदाचारी लगता है, ऐसा लोग कब समझते हैं ?**

- ( अ ) जब वह बुझेदिल हो ।
- ( ब ) जब वह प्रसन्न हो ।
- ( क ) जब वह धर्म की बात करते हो ।
- ( ड ) जब वह पवित्र हो ।

३. लेखक के मातनुसार जीवन की समस्याओ को किस प्रजा ने ठीक से समझा था ?

- ( अ ) प्राचीन भारतीय
- ( ब ) अमेरिकन
- ( क ) चीनी
- ( ड ) आधुनिक भारतीय

## २. निम्नलिखित प्रश्नों के एक – एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. जीवन की सबसे बड़ी गुत्थी कैसे सुलझाय जाय ?

उत्तर : हँसी – खुशी से जीवन जीकर जीवन की सबसे बड़ी गुत्थी को सुलझाया जा सकता है ।

२. जीवन की समस्या किसने ठीक समझा था ?

उत्तर : प्राचीन चिनियों ने जीवन की समस्या को ठीक से समझा था ।

३. दुनिया में सबसे बड़ा बुद्धिमान कोन है ?

उत्तर : दुनिया में सबसे बड़ा बुद्धिमान वही है, जो सबसे ज्यादा खुश रहता हो ।

## ३. निम्नलिखित प्रश्नों के दो – तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. प्रसन्न रहने की कला क्या है ?

उत्तर : जीने की कला एक आवश्यक कला है । हमारे जीवन में हरियाली की आवश्यकता है, सुखेपन या बंजरता की नहीं । खिले हुए पुष्प, बहते झरने, गति पंछी और बहती हवा आदि को देख मनुष्य प्रसन्नता का अनुभव कर सकता है ।

२. खुश रहना केवल एक जरूरत नहीं , यह एक नैतिक उदारदायित्व भी है – कैसे ?

उत्तर : हमारे व्यक्तिगत जीवन का प्रभाव हमी तक सीमित नहीं रहता, वह दूसरों को भी पकड़ता है । या यू कहिए कि हमारे सुख - दुःख की धुन दूसरों को भी लगती है । इसलिए हमारा कर्तव्य है कि न आप उदास हो, न दूसरों को उदास करे । इसलिए कहा गया है कि खुश रहना केवल एक जरूरत नहीं, यह नैतिक उत्तरदायित्व भी है ।

३. हमारी खुशी हमें कब खुश नहीं कर सकती ?

उत्तर : हमारी कोई खुशी हमें खुश नहीं कर सकेगी, अगर हमारे चारों तरफ उदास चेहरे जमा हो जाए । हम खुद खुश रहकर दूसरों को खुश करते हैं और दूसरों को देखकर खुद - खुश होने लगते हैं ।

#### ४. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर दीजिए :

१. आदमी का जीवन उसकी अपनी व्यक्तिगत जायदाद क्यों नहीं है ?

उत्तर : हममें से किसी आदमी का जीवन उसकी अपनी व्यक्तिगत जायदाद नहीं है जैसे दरिया में एक लहर अकेली उठती है, मगर उस एक ही लहर से अनगिनत लहरे बन जाती हैं। यहाँ हमारी कोई बात भी सिर्फ हमारी नहीं है, हम जो कुछ अपने लिए करते हैं, उसमें भी दूसरों का भाग होता है। हमारी कोई भी खुशी – हमें खुश नहीं कर सकेगी अगर हमारे चारों तरफ उदास चेहरे जमा हो जाएँ। हमारा जीवन एक शीशाधार है। यहाँ हर चेहरे का प्रतिबिम्ब एक ही समय में सैकड़ों शीशों पर पड़ता है। अगर एक चेहरे पर भी छाया आ गई, तो वह छाया सैकड़ों चेहरों पर छा जायेगी।

२. हम बुझे दिल और सुखे हुए चेहरे के साथ कहाँ स्थान नहीं प्राप्त कर सकते ?

उत्तर : हम बुझे दिल और सुखे हुए चेहरे के साथ कहाँ स्थान नहीं प्राप्त कर सकते जहाँ सूरज का चमकता हुआ मस्तक, चाँद का हसता हुआ चेहरा, तारों की झलमलाती हुई आँखें, पेड़ों का नृत्य, पंछियों का संगीत, बहते हुए पानी की तरंगें, खिलते हुए फूलों की बहारे अपनी शोभा दिखा रही हैं। प्रकृति की इस रूप – सभा में तो वही जीवन सज सकता है, जो अपने वक्ष में दमकता हुआ दिल और चेहरे पर चमकती हुई आँखें रखता हो और जो चाँदनी में चाँद की तरह निखरकर तारों की छोंद में तारों की तरह चमककर फूलों की क्यारी में फूलों की तरह खिल कर अपना स्थान ले सकता हो।

#### ५. निम्नलिखित शब्दों से कर्तुवाचक संज्ञा बनाईए :

कला	- कलाकार
नीति	- नीतिज्ञा
बात	- बातूनी
दिल	- दिलदार
सदाचार	- सदाचारी
संगीत	- संगीतकार
नृत्य	- नर्तक

**६. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाईए :**

संसार	-	सांसारिक
विश्वास	-	विश्वसनीय
प्रतिबिम्ब	-	प्रतिबिम्बित
प्रकृति	-	प्राकृतिक
समय	-	सामयिक
अंश	-	आंशिक

**७. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाईए :**

प्रसन्न	-	प्रसन्ता
सरल	-	सरलता
बड़ा	-	बडप्पन
खुश	-	खुशी
उदास	-	उदासी
बहुत	-	बहुतायत
आदमी	-	आदमियत